

इस अंक में...

6 | प्रसन्न रहना जीवन का वास्तविक उद्देश्य

8 | समसामयिकी घटना संग्रह

10 | समसामयिकी संक्षिप्तकियाँ

19 आर्थिक घटना संग्रह

- भारतीय रिजर्व बैंक ने गोल्ड मोनेटाइजेशन स्कीम हेतु निर्देश जारी किए
- ट्राई ने 1 जनवरी, 2016 से कॉल ड्रॉप के लिए हर्जाना अनिवार्य किया
- केन्द्र सरकार ने दालों के भंडारण की सीमा तय की

24 राष्ट्रीय घटना संग्रह

- सर्वोच्च न्यायालय ने राष्ट्रीय न्यायिक नियुक्ति आयोग को असंवैधानिक घोषित किया
- प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना के तहत तीन नए एम्स की स्थापना को मंजूरी
- पुर्तगाल नालंदा विवि की स्थापना हेतु समझौता करने वाला पहला यूरोपीयन देश बना

28 अन्तर्राष्ट्रीय घटना संग्रह



- जर्मनी की चांसलर एंजेला मर्केल की भारत यात्रा
- अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन ने ग्लोबल इम्प्लॉयमेंट ट्रेंड्स फॉर यूथ 2015 रिपोर्ट जारी की
- यूएन मुख्यालय में प्रस्तुत किया गया 'नेल्सन मंडेला रूल'
- राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी की जॉर्डन, फिलिस्तीन एवं इजरायल यात्रा सम्पन्न

32 खेल खिलाड़ी

- वीरेन्द्र सहवाग की अन्तर्राष्ट्रीय क्रिकेट के सभी प्रारूपों से सन्यास की घोषणा
- डेविड फेरर ने मलेशियन ओपन के पुरुष एकल वर्ग का खिताब जीता
- पी.वी. सिंधु डेनमार्क ओपन सुपरसीरीज प्रीमियर बैडमिंटन टूर्नामेंट में उपविजेता रही
- श्वेता राठौर एशियन बॉडी बिल्डिंग में रजत जीतने वाली पहली भारतीय खिलाड़ी

35 विज्ञान समाचार

37 महत्वपूर्ण तथ्य संग्रह

लेख

40 अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक लेख—अमरीकी दृष्टिकोण में बदलाव

41 अन्तरिक्ष विज्ञान लेख—(i) जी. एस. एल. वी. द्वारा भारी उपग्रह जीसैट का सफल प्रक्षेपण

42 (ii) अन्तरिक्ष व्यापार में भारत की धमक

84 बैंकिंग : एक दृष्टि में

85 प्रथम पुरस्कृत तार्किक प्रतियोगिता

87 तार्किक प्रतियोगिता क्रमांक-68 का परिणाम

88 रोजगार अवसर

हल प्रश्न-पत्र

43 झारखण्ड वनरक्षी प्रारम्भिक परीक्षा, 2015

49 उत्तराखण्ड उच्च न्यायालय क्लर्क परीक्षा, 2015

56 रेलवे भर्ती सेल (मुम्बई) ग्रुप 'डी' परीक्षा, 2014

नेशनल इंश्योरेंस कम्पनी लि. सहायक भर्ती परीक्षा, 2015

60 तार्किक अभियोग्यता

64 सामान्य सचेतता

67 संख्यात्मक क्षमता

71 कम्प्यूटर जागरूकता

73 English Language

76 आगामी आई.बी.पी.एस. द्वारा आयोजित बैंक लिपिकीय संवर्ग (प्रा.) परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

सर्वाधिकार सुरक्षित, प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के इस मैगजीन का कोई भी भाग न तो पुनरुत्पादित किया जाएगा और न किसी भी रूप में, जैसे इलेक्ट्रॉनिक, मेकेनिकल, फोटोकॉपीइंग, रिकॉर्डिंग अथवा अन्य प्रकार स्टर किया जाएगा. हालांकि इस संस्करण में प्रकाशित सूचनाओं के सही होने का हरसम्भव प्रयास किया गया है, फिर भी न तो प्रकाशक व न अन्य कोई कर्मचारी किसी भी त्रुटि अथवा छूट के लिए उत्तरदायी होगा. अस्वीकृत रचनाओं को लेखकों को वापस भेजने के लिए उनके साथ स्वयं का पता लिखा हुआ लिफाफा मय उपयुक्त डाक टिकटों के प्राप्त होगा. रचना के देर से पहुँचने अथवा रास्ते में खो जाने की कोई जिम्मेदारी नहीं ली जाती. पत्रिका में लेखकों द्वारा प्रेषित बयानों, विचारधाराओं तथा प्रकाशित विज्ञापनों की कोई जिम्मेदारी 'सक्सेस मिस्टर' की नहीं है.

⇒ सम्पादक : महेन्द्र जैन

⇒ रजिस्टर्ड ऑफिस : 2/11-ए, स्वदेशी बीमा नगर, आगरा-2

⇒ सम्पादकीय ऑफिस

1, स्टेट बैंक कॉलोनी, वन चेतना केन्द्र के सामने

आगरा-मथुरा बाईपास, आगरा-282 005

फोन- 4053333, 2531101, 2530966

फैक्स- (0562) 4053330

ई-मेल: सम्पादकीय: publisher@pdgroup.in

कस्टोमर केयर: care@pdgroup.in

⇒ दिल्ली ऑफिस

4845, असारी रोड, दरियागंज,

नई दिल्ली-110 002

फोन- 011-23251844/66

⇒ पटना ऑफिस

पीरमोहनी चौक, कदमकुआँ

पटना-800 003

फोन-0612-2673340

मो-09334137572

⇒ कोलकाता ऑफिस

28, चौधरी लेन, श्याम बाजार

कोलकाता-700 004

फोन-033-25551510

मो-07439359515

⇒ हैदराबाद ऑफिस

1-8-1/B, आर. आर. कॉम्प्लेक्स

बाग लिंगमपल्ली, हैदराबाद-500 044

फोन-040-66753330

मो-09391487283

⇒ हल्द्वानी ऑफिस

8-310/1, ए. के. हाउस

हीरानगर, हल्द्वानी,

जिला-नैनीताल-263 139 (उत्तराखण्ड)

मो-07060421008

⇒ लखनऊ ऑफिस

B-33, ब्लंट स्क्वायर, कानपुर

टैक्सी स्टैण्ड लेन, मवईया,

लखनऊ-226 004

फोन-0522-4109080

मो-09760181118

प्रसन्न रहना जीवन का वास्तविक उद्देश्य

—साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'



“पाश्चात्य विचारकों ने सन्तुष्टि/उपयोगिता को अधिकतम करना ही जीवन का ध्येय माना है. इसके विपरीत भारतीय अर्थशास्त्री प्रो. जे. के. मेहता का मत है कि जीवन की वास्तविक या अधिकतम सन्तुष्टि अधिकाधिक, किन्तु कभी समाप्त न होने वाली इच्छाओं और आवश्यकताओं को पूरा करने में नहीं है, वरन् उन्हें कम-से-कम करने में है.”

हर घड़ी एक किसान की भाँति हम सभी अपने जीवन की बगिया में कुछ-न-कुछ बोते भी रहते हैं व काटते भी रहते हैं. कभी गम की फसल काटते हैं, तो कभी खुशियों की. कभी आँसू के बीज बोते हैं, तो कभी हास्य के.....

जीवन की सरिता को हर कोई इंसान गम-खुशी के किनारों के बीच ही जीता है. हर कोई ऐसा मानता भी है कि—

जीवन है इक नदिया, सुख-दुःख दो किनारे हैं
ना जाने कहाँ जाएं, हम बहते धारे हैं ॥

शायद आपका भी यही विश्वास हो कि यहाँ सुख और दुःख तो लगे ही रहेंगे. किन्तु ऐसा है नहीं..... हमारा कहना है कि सुख और दुःख दोनों ही अपरिपक्व मानसिक दशा के उप-उत्पाद (By-Product) हैं. जीवन का सच्चा स्वरूप इनमें नहीं है, वह तो हर हाल में प्रसन्न रहने में है. हर हाल में अपने साथ खुश जीने में है. इक ऐसी प्रसन्नता, जिसके प्राण अपने से बाहर किसी अन्य हालातों में न बसते हों, वही सच्ची प्रसन्नता है.

यह सच है कि हमारे से जब कुछ अच्छा होता है, तो हमें प्रसन्नता होती है. जब कोई हमसे सार्थकता पाता है, सहयोग, विश्वास और प्रेम पाता है, तो हमें खुशी होती है, परन्तु इन सबमें खुशी, प्रसन्नता का अहसास हमें तब ही हो पाता है, जबकि वो हमारे भीतर भी हो. अगर हमारे भीतर आनंद नहीं है, तो वह वातावरण में नहीं फैल सकेगा. वह दूसरों तक प्रवाहित नहीं हो पाएगा.

जो उदार है, जिंदा दिल है वे जब किसी की सहायता कर पाते हैं, तो सामने वाला तो कृतार्थ महसूस करता ही है, जिंदादिल आदमी स्वयं को भी कृतार्थ महसूस करता है. उसमें भी धन्यता की महसूसी जागृत होती है. ये महसूसी प्रतिपल होती रहे—यही इस जीवन का वास्तविक उद्देश्य है.

आत्मज्ञानी श्री विराट गुरुजी का कहना तो यहाँ तक है कि—

स्वतः चलित इस जग में, क्या करने को कुछ है,
करने को बस केवल खुद को करना खुश है।
पकड़ मात्र से बिगड़ी खुशियाँ, बंधन पाया,
खुद आनंदित औरों को, आनंद बरसाया ॥
बंद सीप में छोटी दुनिया में सहमा था,
मुक्त हुआ सबके मन भाया,
खुद आनंदित औरों को आनंद बरसाया ॥